"अंधा"

• अंधे कै राहि दसिऐ अंधा होइ सु जाई । होई सुजाखा नानका सो कउ उझड़ पाई ।

अर्थ:- अगर कोई अंधा मनुष्य किसी और को राह बताए तो उस राह पर वही चलता है जो खुद अंधा हो हे नानक ! आँख वाला मनुष्य अंधे के कहने पर गलत राह पर नहीं पड़ता ।

अंधे ऐहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि । अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ।1। म02।

अर्थः- पर आत्मिक जीवन में ऐसे लोगों को अंधे नहीं कहा जाता जिनके मुँह पर आँखें नहीं हैं, हे नानक ! अंधे वही हैं जो मालिक प्रभु से टूटे हुए हैं ।

साहबि अंधा जो कीआ करे सुजाखा होई । जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोई ।

अर्थः- जिस मनुष्य को मालिक - प्रभु ने स्वयं अंधा कर दिया है वह तब ही आँख वाला हो सकता है यदि प्रभु स्वयं आँख वाला बनाए, नहीं तो, अंधा मनुष्य तो जिस तरह की समझ रखता है उसी तरह किए जाता है चाहे उसको कोई सौ बार समझाए ।

जिथै सु वसत न जापई आपे वरतउ जाणि । नानक गाहक किउ लए सकै न वसत पछाणि ।2। म02।

अर्थः- जिस मनुष्य के अंदर 'नाम' रूप पदार्थ की समझ नहीं वहाँ अहंकार वाला व्यवहार ही समझो क्योंकि, हे नानक ! गाहक जिस सौदे को पहचान ही नहीं सकता उसका वह वणज ही कैसे करे ?

सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होई । नानक हुकम न बुझई अंधा कहीऐ सोई ।3। पउड़ी।

अर्थः- जो मनुष्य प्रभु की रजा में नेत्र - हीन हो गया उसको हम अंधा नहीं कहते, हे नानक ! वह मनुष्य अंधा कहा जाता है जो रजा को समझता नहीं ।

नानक अंधा होई के रतना परखण जाई । रतना सार न जाणई आवै आप लखाई ।1। म02।

अर्थः- हे नानक ! जो मनुष्य खुद अंधा हो और चल पड़े रत्न परखने, वह रत्नों की कद्र तो जानता नहीं, पर अपने आप को उजागर करा आता है भाव, अपना अंधापन जाहिर कर आता है ।

रतना केरी गुथली रतनी खोली आई । वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाई ।

अर्थः- प्रभु के गुण रूपी थैली सतिगुरु ने आ के खोली है, से गुत्थी बेचने वाले सतिगुरु और लेने वाले गुरमुख दोनों के हृदय में टिक रही है भाव, दोनों को ये गुण प्यारे लग रहे हैं ।

जिन गुण पले नानका माणक वणजहि सेई । रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोई ।2। पउड़ी ।

अर्थः- हे नानक ! जिनके पास भाव, हृदय में प्रभु की महिमा के गुण मौजूद हैं वही मनुष्य ही नाम रत्न का लेन - देन व्यापार करते हैं पर जो इन रत्नों की कद्र नहीं जानते वे अंधों की तरह जगत में फिरते हैं ।

नउ दरवाजे काइआ कोट है दसवै गुपत रखीजै । वजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ।

अर्थः- शरीर मानो एक किला है, इसके नौ इन्द्रियों के रूप में गुप्त दरवाजे प्रकट हैं, और दसवाँ द्वार गुप्त रखा हुआ है उस दसवें दरवाजे के किवाड़ बड़े कठोर हैं खुलते नहीं, खुलते केवल सतिगुरु के शब्द से ही हैं, जब ये कठोर किवाड़ खुल जाते हैं ।

अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै । तित घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै । सभ महि एक वरतदा जिनि रचन रचाई ।5।

अर्थः- तो मानो एक रस वाले बाजे बज पड़ते हैं जो सतिगुरु के शब्द के द्वारा सुने जाते हैं । जिस हृदय में ये आनंद पैदा होता है उस हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, प्रभु की भक्ति करके वह मनुष्य प्रभु में मिल

जाता है । जिस प्रभु ने यह सारी रचना रची है वह सारे जीवों में व्यापक है पर उस से मेल गुरु के द्वारा ही होता है ।

आपे स्रिसटि साजीअन आपि गुपत रखेसा । गुर सेवा ते जाणिआ सच परगटीएसा । सभ किछ सचो सच है गुरि सोझी पाई ।16।

(2-954-955)

अर्थः- प्रभु ने खुद ही सृष्टि रची है और खुद ही उस सृष्टि में उसने अपने आप को छुपाया हुआ है । उस प्रभु की सूझ सतिगुरु के हुक्म में चलने से आती है तब ही सच्चा प्रभु प्रकट होता है । है तो हर जगह सच्चा प्रभु खुद ही खुद पर ये समझ सतिगुरु के द्वारा ही आती है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"